इल्तुतमिश की प्रशासकीय सफलतायें

इल्तुतमिश केवल एक विजेता ही न था वरन् उसमें शासन-सम्बन्धी कार्य करने की प्रतिभा भी थी। यद्यपि उसका अधिकांश समय साम्राज्य को दृढ़ करने में व्यतीत हुआ किन्तु उसने रचनात्मक कार्य करने की ओर भी ध्यान दिया। उसके शासन-सम्बन्धी कार्य निम्नलिखित थे—

(१) चालीस गुलामों के दल का संगठन

इल्तुतमिश ने चालीस गुलामों के एक दल का संगठन किया। इस दल के सदस्य चालीस योग्य गुलाम थे जिन्होंने इल्तुतमिश के उद्देश्यों की प्राप्ति में उसको बहुत अधिक सहायता दी थी। लगभग समस्त मुसलमान शासकों के पास इस प्रकार का एक संगठन था। किन्तु इल्तुतमिश ने इस दल में योग्य एवं प्रतिभाशाली व्यक्तियों को स्थान दिया। इनकी शक्ति तथा सहायता के आधार पर उसने केन्द्रीय शासन को दृढ़ किया।

(२) मुद्रा में सुधार

इल्तुतमिश ने मुद्रा में भी सुधार का प्रयत्न किया। उसने शुद्ध अरबी मुद्राओं का प्रचलन किया। उसने चाँदी के टंके का प्रयोग किया।

"Iltutmish constituted the veritable commencement of silver coinage of Delhi Pathans."
—Thomas.

(३) न्यायप्रिय शासक

इल्तुतमिश न्यायप्रिय शासक था। उसने समस्त बड़े-बड़े नगरों में काजी आदि नियुक्त किये जिनके निर्णय के विरुद्ध अपील स्वयं सुल्तान सुना करता था। इतिहासकार इब्नबतूता के अनुसार सुल्तान के महल के सामने दो सिंह बने थे जिनके गलों में घंटियाँ लटकी हुई थीं। सताया हुआ व्यक्ति इन घंटियों को बजाता था। उसकी फरियाद सुनी जाती थी और तुरन्त न्याय की व्यवस्था की जाती थी।

इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत का संस्थापक

(१) कुतुबुद्दीन ऐबक गजनी का शासक होना चाहता था

कुतुबुद्दीन भारत का पहला मुस्लिम सुल्तान था किन्तु उसे मुस्लिम शक्ति का वास्तविक संस्थापक नहीं कहा जा सकता। दिल्ली की गद्दी पर बैठ जाने के बाद भी उसकी दृष्टि गजनी के सिंहासन पर लगी रही और एलदौज के विरुद्ध उसने गजनी पर आक्रमण करके सफलता पाई, किन्तु वहाँ की जनता ने उसके शासन को पसन्द नहीं किया इसलिये विवश होकर उसे भारत लौटना पड़ा। चार वर्ष के संक्षिप्त शासनकाल में उसका सम्पूर्ण समय राजपूतों के विद्रोहों का दमन करने ही में लग गया और दिल्ली सल्तनत की हालत उसके मरने के बाद गड़बड़ हो गई।

(२) इल्तुतमिश को सभी प्रदेशों की विजय प्राप्त करनी पड़ी

कुतुबुद्दीन के शासन-काल में दिल्ली सल्तनत की स्थिति जरा भी सुदृढ़ नहीं होने पाई थी। केवल राजधानी को छोड़कर सल्तनत के लगभग सभी भाग अरक्षित अवस्था में थे। आन्तरिक विद्रोहों और वाह्य आक्रमणों से सल्तनत को निरन्तर खतरा था। इन खतरों को इल्तुतमिश ने ही दूर किया। इसलिए उसको ही दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक कहा जाना चाहिए, कुतुबुद्दीन ऐबक को नहीं।

(३) राजपूत राज्यों की पुनर्विजय

कुतुबुद्दीन की मृत्यु के शीघ्र बाद राजस्थान के राजपूत राजाओं ने मुसलमानों की गुलामी का जुआ उतार फेंका था। विद्रोहियों का दमन करने के बाद इल्तुतमिश ने इन राज्यों पर फिर अपना आधिपत्य स्थापित किया। १२२६ ई० में उसने रणथंम्भौर पर आक्रमण किया। राजपूतों ने अदम्य उत्साह के साथ दुश्मन का सामना किया परन्तु वे पराजित हुए और रणथंभौर पर मुसलमानों का अधिकार हो गया। दूसरे वर्ष उसने परमार की राजधानी मंदौर पर आक्रमण किया। १२२९ ई० में जालौर को जीत लिया गया। इसके बाद अजमेर, नागोड व बियाना को जीता। १२३१ ई० में इल्तुतमिश ग्वालियर पर चढ़ बैठा और एक वर्ष के घेरे के बाद ग्वालियर पर भी मुसलमानों का अधिकार हो गया। गुहिलौत राजपूतों की राजधानी नागदा पर भी उसने आक्रमण किया, परन्तु उसे सफलता न मिली। उसने १२३४ ई० में मालवा पर हमला किया। कहा जाता है कि उसने उज्जैन व भिलसा के समृद्ध नगरों को बुरी तरह लूटा और उज्जैन के महाकाल मंदिर को नष्ट-भ्रष्ट किया। इन विजयों के परिणामस्वरूप लगभग समस्त राजस्थान इल्तुतमिश के अधिकार में आ गया।

(४) मंगोल आक्रमण से राज्य को बचाया (१२२१ ई०)

इस समय मंगोल-आक्रमण का दिल्ली सल्तनत के लिये नया खतरा उपस्थित हो गया था। इन्होंने ख्वारिज्म पर आक्रमण कर दिया था। इनके डर के मारे ख्वारिज्म के शाह ने भाग कर पंजाब में शरण ली। मंगोलों ने उसका पीछा किया और वे भारत में आ धमके। शाह ने इल्तुतमिश की शरण माँगी, परन्तु इल्तुतमिश ने उसे आश्रय देने से साफ इन्कार कर दिया। इल्तुतमिश ने शाह को शरण न दे कर बड़ी चतुराई का काम किया। यदि वह शाह को शरण देता तो यह निश्चित था कि मंगोल दिल्ली सल्तनत को छिन्न-भिन्न कर देते। डा० ईश्वरी प्रसाद ने लिखा है—"इस प्रकार भारत से एक महान संकट टल गया और अब स्थानीय शत्रुओं का दमन करने में इल्तुतमिश ने अधिक कठिनाई का अनुभव न किया।"

(५) दोआब पर अधिकार

दोआब के कई भू-भाग भी दिल्ली से स्वतंत्र हो गए थे। इल्तुतमिश ने शीघ्र ही बदायूँ, कन्नौज तथा बनारस के हिन्दू राजाओं को पराजित कर उनके राज्य को अपने राज्य में मिला लिया। उसने रुहेलखण्ड पर भी अधिकार कर लिया। उसने बहराइच पर विजय प्राप्त की और अवध पर भी तुर्की सेना का अधिकार हो गया। इसके बाद उसने चन्दावर तथा तिरहुत पर आक्रमण किया। ऐसा अनुमान है कि उसने तिरहुत प्रदेश को अपने राज्य में सम्मिलित नहीं किया अथवा वह उस पर अपना अधिकार स्थापित नहीं कर सका।

(६) खलीफा द्वारा मान्यता

१२२९ ई० में बगदाद के खलीफा ने इल्तुतमिश को भारत का सुल्तान स्वीकार किया और इसके लिए एक प्रमाण-पत्र भिजवाया। इससे इल्तुतमिश की प्रतिष्ठा भी बढ़ी और उसके हाथ भी मजबूत हुए। खलीफा की स्वीकृति का अर्थ यह था कि अब इल्तुतमिश का विरोध करना धर्म-संगत नहीं था। फलतः जो मुसलमान उसे अपना राजा मानने के लिये तैयार न थे उनके मुँह पर ताला पड़ गया।

"This added a new element of strength to Iltutmish's authority and gave him a status in the Muslim world."